पाठ - 01
नमक का दरोगा

पाठ के साथ

उत्तर1: कहानी का नायक मुंशी वंशीधर हमें सर्वाधिक प्रभावित करता है। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है, जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। उसने अलोपीदीन दातागंज जैसे सबसे अमीर और विख्यात व्यक्ति को गिरफ्तार करने का साहस दिखाया। आखिरकर पंडित आलोपीदीन भी उसकी दृढ़ता से मुग्ध हो जाते हैं।

उत्तर2: पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के निम्नलिखित दो पहलू उभरकर आते हैं -
एक - पैसे कमाने के लिए नियमविरुद्ध कार्य करनेवाला भ्रष्ट व्यक्ति। लोगों पर जुल्म करता था परंतु समाज में वह सफ़ेदपोश व्यक्ति था। यह उसके दोगले चरित्र को उजागर करता है। दो - कहानी के अंत में उसका उज्ज्वल चरित्र सामने आता है। ईमानदारी एवं धर्मनिष्ठा के गुणों की कद्र करनेवाला व्यक्ति।

उत्तर3:

(क) वृद्ध मुंशी - वृद्ध मुंशी समाज में धन को महत्ता देनेवाले भ्रष्ट व्यक्ति है। वे अपने बेटे को ऊपरी आय बनाने की सलाह देते हैं। वे कहते हैं - 'मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।'

(ख) वकील - आजकल जैसे धन लूटना ही वकीलों का धर्म बन गया हैं। वकील धन के लिए गलत व्यक्ति के पक्ष में लड़ते हैं। मजिस्ट्रेट के अलोपीदीन के हक में फैसला सुनाने पर वकील खुशी से उछल पड़ता है।

(ग) शहर की भीड़ - शहर की भीड़ दूसरों के दुखों में तमाशे जैसा मज़ा लेती है। पाठ में एक स्थान पर कहा गया है - 'भीड़ के मारे छत और दीवार में भेद न रह गया।'

उत्तर4:

(क) यह उक्ति बूढ़े मुंशीजी की है।

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है क्योंकि वह महीने में एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। वेतन भी एक ही दिन आता है जैसे-जैसे माह आगे बढ़ता है वैसे वह खर्च होता जाता है।

(ग) जी नहीं, मैं एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत नहीं हूँ। किसी भी व्यक्ति को भ्रष्टाचार से दूर रहना चाहिए। एक पिता अपने बेटे को रिश्वत लेने की सलाह नहीं दे सकता और न देनी चाहिए।

उत्तर5: ईमानदारी का फल - ईमानदारी का फल हमेंशा सुखद होता है। मुंशी वंशीधर को भी कठिनाइयों सहने के बाद अंत में ईमानदारी का सुखद फल मिलता है।
भ्रष्टाचार और न्याय व्यवस्था - इस कहानी में दिखाया गया है कि न्याय के रक्षक वकील कैसे अपने ईमान को बेचकर गलत आलोपीदीन का साथ देते हैं।

उत्तर6: कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे निम्न कारण हो सकते हैं -

- उसकी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से अलोपीदीन प्रभावित हो गए थे।
- वे आत्मग्लानि का अनुभव कर रहे थे।

पाठ के आस पास:

उत्तर1: वंशीधर का ऐसा करना उचित नहीं था। मैं अलोपीदीन के प्रति कृतज्ञता दिखाते हुए उन्हें नौकरी के लिए मना कर देता क्योंकि लोगों पर जुल्म करके कमाई हुई बेईमानी की कमाई की रखवाली करना मेरे आदर्शों के विरुद्ध है।

उत्तर2: वर्तमान समाज में ऐसे पद हैं - आयकर, बिक्रीकर, सेल्सटेक्स इंस्पेक्टर, आदि। इन्हें पाने के लिए लोग लालाहित रहते होंगे क्योंकि इसमें ऊपरी कमाई (रिश्वत) मिलने की संभावना ज्यादा होती है।

उत्तर3:

(क) जब मैंने देखा पढ़े-लिखें लोग गंदगी फैला रहे है तो मुझे उनका पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा।

(ख) जब हम पढ़े-लिखें लोगों को उनके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की योजना बनाते देखते हैं तो हमें उनका पढ़ना-लिखना सार्थक लगता हैं।

(ग) 'पढ़ना-लिखना' को शिक्षा के अर्थ में प्रयुक्त किया गया हैं। नहीं, इनमें अंतर है।

उत्तर4: यह कथन समाज में लड़कियों की उपेक्षित स्थिति को दर्शाता है। लड़कियों को बोझ माना जाता हैं। उनकी उचित देख-भाल नहीं की जा सकती।

उत्तर5: अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों देखकर मेरे मन में यह प्रतिक्रिया होती है कि समाज में सारे व्यक्ति वंशीधर जैसे चरित्रवान और साहसी क्यों नहीं होते। जो अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को उनके कुकर्मों की सज़ा दिलाएँ।

समझाइए तो ज़रा -

उत्तर1: इसमें नौकरी के ओहदे और उससे जुड़े सन्मान से भी ज्यादा महत्त्व ऊपरी कमाई को दिया गया है। ऐसी नौकरी करने के लिए कहा जा रहा है जहा ज्यादा से ज्यादा रिश्वत मिल सके।

उत्तर2: मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है, जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। इस बुराइयों से भरे हुए युग से अपने आप को दूर रखने के लिए वंशीधर धैर्य को अपना मित्र, बुद्धि को अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन को ही अपना सहायक मानते हैं।

उत्तर3: वंशीधर को रात को सोते-सोते अचानक पुल पर से जाती हुई गाड़ियों की गडगडाहट सुनाई दी। उन्हें भ्रम हुआ कि सोचा कुछ तो गलत हुआ रहा है। उन्होंने तर्क से सोचा कि देर रात अंधेरे में कौन गाड़ियाँ ले जाएगा और इस तर्क से उनका भ्रम पुष्ट हो गया।

उत्तर4: आजकल न्यायालय में भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। जैसे धन लूटना ही वकीलों का धर्म बन गया हैं। वकील धन के लिए गलत व्यक्ति के पक्ष में लड़ते हैं। तभी आलोपीदीन जैसे लोग न्याय और नीति को अपने वश में रखते हैं।

उत्तर5: पंडित आलोपीदीन रात में गिरफ्तार हुए ही थे कि खबर सब जगह फैल गई। दुनिया की जबान टीका-टिप्पणी करने से दिन हो या रात रूकती नहीं।

उत्तर6: वृद्ध मुंशी जी अपने बेटे वंशीधर की सत्यनिष्ठा से नारज हैं। वे सोचते है रिश्वत न लेकर और आलोपीदीन को पकड़कर वंशीधर ने गलती की और उपर्युक्त कथन कहते हैं।

उत्तर7: वंशीधर ने आलोपीदीन के द्वारा दिए जानेवाले धन को ठुकराकर उसके धन के मिथ्याभिमान को चूर-चूर कर डाला। धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

उत्तर8: न्यायालय में वंशीधर और आलोपीदीन का मुकदमा चला। वंशीधर धर्म के लिए और आलोपीदीन धन के सहारे अधर्म के लिए लड़ रहा था। इस प्रकार न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

भाषा की बात:

उत्तर1: भाषा की चित्रात्मकता -

'जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे...एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद से सो रहे थे।'

लोकोक्तियाँ -

- पूर्णमासी का चाँद।
- सुअवसर ने मोती दे दिया।

मुहावरे -

- फूले न समाना।
- सन्नाटा छाना।

- पंजे में आना।
- हाथ मलना।
- मुँह में कालिख लगाना आदि।

इनके प्रयोग से कहानी का प्रभाव बढ़ा है।

उत्तर2: कहानी में मासिक वेतन के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया गया है -

- पूर्णमासी का चाँद
- पीर का मजार

हमारे विशेषण -

- एक दिन की खुशी (क्योंकि उस दिन बहुत खुश होते हैं)
- चार दिन की चाँदनी (कुछ दिन तक वेतन आने पर सारी चीज़े ले ली जाती है। चार दिन में सब खर्च हो जाता है)

उत्तर3:

(क) बाबूजी आशीर्वाद - बाबूजी आशीर्वाद दीजिए।

(ख) सरकारी हुक्म - वे सरकारी हुक्म का पालन करते हैं।

(ग) दातागंज के - पंडित जी दातागंज के रहने वाले हैं।

(घ) कानपुर - यह बस कानपुर जाती है।